IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय समाज में लैंगिक असमानता की स्थिति (एक समस्या एवं सुझाव)

डॉ0 आभा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा संकाय (बी0एड0),
वी0एस0एस0डी0 कॉलेज, कानपुर

सारांश

हम 21वीं शताब्दी के भारतीय होने पर गर्व करते हैं जो एक बेटा होने पर खुशी तथा बेटी होने पर दु:खी तथा शान्त हो जाते हैं वास्तविकता तो यह है कि हम तथा हमारा समाज इस बात को स्वीकार ही नहीं करना चाहता कि स्त्री तथा पुरूष एक समान हैं समाज में महिलाओं को हमेशा कमजोर, अबला ही समझा जाता है। भारत जैसे देश में यह भेदभाव, इतना ह कि विश्व में 153 देशों में भारत लैंगिक असमानता के क्षेत्र में 112वें स्थान पर है।

कुंजी शब्द– लैंगिक असमानता, आर्थिक, ग्रामीण, सामाजिक प्रणाली, वैश्विक, अंतराल, सूचकांक।

प्रस्तावना :– हमारे भारतीय समाज में शुरू से ही लैंगिक असमानता रही है, महिलाओं के साथ शुरू से ही भेदभाव तथा पक्षपात की भावना रही है, उन्हें हमेशा से हीन दृष्टि से देखा जाता है यह हमारे समाज की विडम्बना है कि पुरूष को जन्म दने वाली स्त्री को ही भेदभाव तथा लैंगिक असमानता का सामना करना पड़ता है वह जगत की जननी तो है लेकिन उसे वो सम्मान प्राप्त नहीं होता है जो वास्तविकता में मिलना चाहिए, अतः हमें यह जानने की आवश्यकता है कि वास्तव में लैंगिक असमानता है क्यो?

लैंगिक असमानता से तात्पर्य :– हम 21वीं शताब्दी के भारतीय होने पर गर्व करते हैं लेकिन हमारी मानसिकता को देखें तो पाते हैं कि हमारे घरों में जब पुत्र पैदा होता है तो बहुत ज्यादा खुशी मनाई जाती है, ढोल, नगाड़े तथा मिठाईयों के साथ उसका स्वागत होता है परतु दूसरी तरफ अगर लड़की पैदा होती है तो लोगों के चेहरे उतर जाते हैं, चारों तरफ मायूसी छा जाती है तो कभी–कभी पैदा होते ही उसकी हत्या भी कर दी जाती

है और यदि किसी कारणवश उनकी हत्या नहीं होती तो जिन्दगी भर उसे भेदभाव का सामना करना पड़ता है। अतः हम कह सकते हैं कि लैंगिक आधार पर महिलाों के साथ भेदभाव ही लैंगिक असमानता होती है। परम्परागत रूप से ही समाज में महिलाओं को कमजोर ही समझा जाता है क्योंकि शारीरिक संरचना के आधार पर समाज यह निर्धारित करता है कि वह कमजोर ही पैदा होती है इसलिए कमजोर है। वैश्विक लैंगिक अन्तराल सूचकांक–2020 में भारत 153 देशों में 112वें स्थान पर रहा है, इस आँकड़े के आधार पर यह साफ नजर आता है कि वास्तव में भारत में लैंगिक असमानता कितनी व्यापक समस्या है। इस समस्या को अधिक जानने के लिए हमें यह जानने की आवश्यकता है कि वास्तव में लैंगिक असमानता किन–किन क्षेत्रों में अधिक है।

लैंगिक असमानता के विभिन्न क्षेत्र :–

1. सामाजिक क्षेत्र – अगर हम देखें कि भारतीय समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति क्या है तो हम पाते हैं कि उन्हें केवल घर का काम करने योग्य ही समझा जाता है घर–परिवार के किसी निर्णय में उनका अधिकार नहीं होता है। महिलाओं के मुद्दों से सम्बन्धित विभिन्न सामाजिक संगठनों में भी महिलाओं की न्यूनतम संख्या लैंगिक असमानता के विकराल रूप को व्यक्त करती है।

2. आर्थिक क्षेत्र – महिलायें पुरूषों के साथ काम तो कर रही हैं कि उन्हें वहाँ भी भेदभाव का हमेशा सामना करना पड़ता है उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता तथा साथ ही उन्हें पुरूषों के शोषण का भी शिकार होना पड़ता है तथा बहुत बार तो उन्हें कम वेतन में ही गुजारा करना पड़ता है।

3. राजनीतिक क्षेत्र – वैसे तो सभी राजनीतिक दल समानता का दावा करते हैं, परन्तु वे न तो चुनाव में महिलाओं को प्रत्याशी के रूप में टिकट देते हैं और न ही दल के प्रमुख पदों पर उनकी नियुक्ति करते हैं।

4. विज्ञान के क्षेत्र में – जब हम वैज्ञानिक समुदाय की तरफ देखते हैं तो पाते हैं कि इस क्षेत्र में भी लैंगिक असमानता विद्यमान है वैसे देखा जाये कि पहले तो वैज्ञानिक क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश ही बहुत कम होता है अगर होता भी है तो उन्हें कम महत्व के प्रोजेक्ट इत्यादि में लगा दिया जाता है जिस प्रकार हम मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध स्वर्गीय ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम से परिचित हैं तो क्या मिसाइल वुमेन ऑफ इण्डिया टेसी थॉमस के नाम से भी परिचित हैं।

5. मनोरंजन के क्षेत्र में – इस क्षेत्र में तो लैंगिक असमानता के कारण महिला प्रधान फिल्मों की संख्या बहुत कम है तथा इस क्षेत्र में महिलाओं का शोषण भी बहुत होता है।

6. खेल क्षेत्र में – खेलों में मिलने वाली पुरस्कार राशि पुरूष खिलाड़ियों की बजाय महिला खिलाड़ियों को कम मिलती है चाहे कुश्ती हो या क्रिकेट जितना महत्व पुरूषों की टीम को मिलता है उतना महिलाओं की टीम को नहीं।

भारत में लैंगिक असमानता के कारण :– वैसे तो देखा जाये तो जैविकीय दृष्टि से भी प्रकृति ने पुरूष और स्त्री को एक समान नहीं बनाया है तथा उसके साथ–साथ अनेक कारण जो हमारे समाज में उभर कर आते हैं जो कि लैंगिक असमानता को बढ़ावा देते हैं।

1. पुरूष प्रधान समाज – अधिकतर समाज पुरूष प्रधान है यहाँ पुरूषों का स्त्रियों पर वर्चस्व रहा है कुछ जनजातीय समुदायों को छोड़कर अधिकतर समाज पुरूष प्रधान ही है सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था पुरूषों द्वारा ही निर्धारित होती है यह भी लैंगिक असमानता का एक कारण है।

2. देश की ग्रामीण सामाजिक प्रणाली – भारत की अधिकांश जनता कृषि पर निर्भर होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा ग्रामीण परिवेश में महिलाओं को घर की चारदीवारी में ज्यादा समय व्यतीत करना पड़ता है।

3. शिक्षा का अभाव – स्त्रियाँ अशिक्षित होने के कारण अंधविश्वासों तथा पुरानी कुरीतियों में दबी रहती है जिससे वे अपने अधिकारों का सही उपयोग नहीं कर पाती हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुरूष प्रधान समाज के कारण भारतीय समाज में महिलाओं को शोषण का शिकार बचपन से ही होना पड़ता है उदाहरण के लिये प्राचीन भारतीय हिन्दू कानून के निर्माता मनु के अनुसार ''ऐसा माना जाता है कि औरत को अपने बाल्यकाल में पिता के अधीन, शादी के बाद पति के अधीन और अपनी वृद्धावस्था या विधवा होने क बाद अपने पुत्र के अधीन रहना चाहिये। किसी भी परिस्थिति में उसे खुद को स्वतंत्र रहने की अनुमति नहीं है।''

इसी प्रकार पुत्री की शिक्षा पर निवेश करना गलत माना जाता है क्योंकि वह तो घर छोड़कर दूसरे घर चली जायेगी। इस प्रकार यह सभी कारण लैंगिक असमानता के कारण ही हैं।

उपाय– लिंग असमानता को दूर करने के लिये भारतीय संविधान ने अनेक सकारात्मक कदम उठाये हैं, संविधान में सबसे अहम बात महिलाओं को भी वोट डालने का अधिकार प्राप्त है।

संविधान का अनुच्छेद 15 भी लिंग, धर्म, जाति और जन्म स्थान भेदभावों को निषेध करता है।

अनुच्छेद 15(3) किसी भी राज्य को बच्चों और महिलाओं के लिये विशेष प्रावधान बनाने के लिये अधिकारिक करता है। राजनीतिक प्रतिभाग के क्षेत्र में भारत लगातार अच्छा प्रयास कर रहा है इसी के परिणामस्वरूप वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक–2020के राजनीतिक सशक्तीकरण और भागीदारी मानक पर अन्य बिन्दुओं की अपेक्षा भारत को 18वाँ स्थान प्राप्त हुआ। मंत्रिमण्डल में महिलाओं की भागीदारी पहले से बढ़कर 23% हो गई है तथा इसमें भारत विश्व में 69वें स्थान पर ह।

इसी क्रम में तीन तलाक, हाजी अली दरगाह में प्रवेश जैसे मुद्दों पर सरकार तथा न्यायालय की सक्रियता के कारण महिलाओं को उनका अधिकार प्रदान किया जा रहा है ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं'', 'वन स्टॉप सेंटर योजना' महिला हेल्पलाइन योजना और महिला शक्ति केन्द्र जैसो योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तीकरण का प्रयास किया जा रहा है। आर्थिक क्षेत्र मं आत्मनिर्भरता हेतु मुद्रा और अन्य महिला केन्द्रित योजनाएँ चलाई जा रही हैं।

लैंगिक असमानता को दूर करने के लिये कानूनी प्रावधानों के अलावा किसी देश के बजट में महिला सशक्तीकरण तथा शिशु कल्याण के लिये किये जाने वाले धन आवंटन के उल्लेख को जेंडर बजटिंग शब्द विगत दो तीन दशकों से वैश्विक पटल पर उभरा है इसके जरिये सरकारी याजनाओं का लाभ महिलाओं तक पहुँचाया जाता है।

निषकर्ष :–

अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि लैंगिक असमानता के उद्देश्य को हासिल करना जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन और कार्यालयों में कुछ पोस्टर चिपकाने तक ही सीमित नहीं है। यह मूल रूप से समाज की सोच और विचार बदलने से ही प्राप्त हो सकेगा तथा सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों को क्रियान्वित करना होगा तथा कामकाजी महिलाओं के लिये समान वेतन सुनिश्चित करना होगा, महिलाओं को सम्पत्ति में अधिकार कवेल दिखावे के लिए नहीं होगा उन्हें वास्तविकता में देना होगा। जेंडर बजटिंग और

सामाजिक सुधारों के एकीकृत प्रयास से ही भारत को लैंगिक असमानता के बंधनों से मुक्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. https://hi.m.wikipedia.org.>wiki
2. https://sapggdcballia.ac.in
3. https://sankarifocus.com
4. हन्फी एम0ए0 – स्त्री शिक्षा
5. शर्मा प्रेम नारायण – महिला सशक्तीकरण एवं समग्र विकास
6. सिंह वी0एन0 – नारीवाद